शोध मंथन Vol. XV No.II Apr.-June 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

संगीत शिक्षा एवं शिक्षण विधियाँ

प्राप्तिः 10.05.2024
स्वीकृतः 27.06.2024

53

ऋचा वर्मा
शोधार्थी, संगीत विभाग
महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली
ईमेलः *richaverma220500@gmail.com*

सारांश

शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास का मुख्य साधन है। सामान्य शिक्षा मनुष्य के मानसिक विकास में सहायक है तथा संगीत शिक्षा मानसिक विकास के साथ साथ बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। आधुनिकता के इस दौर में संगीत कला ने न केवल मनोरंजन के क्षेत्र में अपितु चिकित्सा के क्षेत्र में, फिल्मी जगत में, योग जगत में, अध्यात्म जगत में, यहां तक की व्यवसाय के क्षेत्र में भी अपना उत्कृष्टम स्थान प्राप्त कर लिया है। इसके अतिरिक्त संगीत विषय में अनेको अनुसन्धान भी किए जा रहे हैं। संगीत, शिक्षण के क्षेत्र में भी अपना वर्चस्व स्थापित करता जा रहा है। संगीत शिक्षण भी एक कला है। संगीत शिक्षक द्वारा संगीत को और भी अधिक प्रभावी बनाने हेतु भिन्न भिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाना आवश्यक है।

मुख्य बिन्दू

संगीत शिक्षा, शिक्षण विधियाँ, प्रभावशाली, मानसिक विकास, चारित्रिक विकास।

प्रस्तावना

सभी ललित कलाओं में सर्वश्रेष्ठ संगीत कला, प्रकृति की सबसे बड़ी देन है। जिसका प्रभाव सार्वभौमिक रूप से प्रकृति के प्रत्येक जीव पर पड़ता है। अतः संगीत जैसी अद्भुत कला की शिक्षा प्राप्त करना मनुष्य के मानसिक विकास एवं चारित्रिक निर्माण हेतु अति आवश्यक है। वैदिक काल में परम्परागत रूप से चली आ रही गुरु–शिष्य परम्परा के अन्तर्गत संगीत की शिक्षा दी जाती थी। इससे पहले चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) का ज्ञान गुरुकुल से प्राप्त होता था। धीरे–धीरे समय बदला और संगीत का इतिहास बना, तालबद्ध रागों की रचना की गयी। विभिन्न प्रकार की गायन शैलियों का निर्माण हुआ, विभिन्न परम्परायें बनी जिसके पश्चात् गुरुकुल पद्धतियों का एक अहम स्थान बन गया। तत्पश्चात् शिक्षण कार्य विद्यालयों, महाविद्यालयों के अन्तर्गत किया जाने लगा। जैसे–जैसे समय बदलता गया, वैसे–वैसे शिक्षण कार्य में भी परिवर्तन आते गए। आज संगीत विद्यालयों, महाविद्यालयों की दहलीज पार करके शोध संगीत सेमीनार, वेबीनार और नेट जैसी तकनीकी कला कौशल की सीमा के मध्य आकर विकास का ऊचाईयों को छू रहा है। फिर भी इस कला ने अपने वास्तविक और आध्यात्मिक रूप को नहीं खोया है। जैसे–जैसे समय के साथ–साथ

मनुष्य और समाज ने आधुनिकता में प्रवेश किया, वैसे–वैसे शिक्षण प्रणाली में भी नवीनता के साथ–साथ उन्नति होती चली गयी।

सत्य तो यह है कि पाठ्य–पुस्तकों द्वारा संगीत का शास्त्रात्मक ज्ञान तो प्राप्त किया जा सकता है किन्तु क्रियात्मक ज्ञान नहीं। इस प्रकार भारतीय संगीत मुख्य रूप से मौखिक संचरण को महत्व देता है। कहने का तात्पर्य यह है कि गुरु से शिष्य, उससे पुनः शिष्य, इसी मौखिक संचरण के माध्यम से ही यह कला आज भी जीवित है। संगीत की परम्परागत शिक्षण संस्थायें एवं व्यवसायिक शिक्षण संस्थायें, यह दोनों ही आधुनिक संगीत प्रणाली के सशक्त पक्ष हैं। प्राचीन समय में यदि कोई विद्यार्थी संगीत को आजीविका का माध्यम बनाता था तो समाज में उसे हीन दृष्टि से देखा जाता था क्योंकि उस समय संगीत केवल मनोरंजन का साधन मात्र था किन्तु आज ऐसा नहीं है। वर्तमान समय में संगीत शिक्षण का उच्च स्थान है साथ ही यह कला एक सम्मानित व्यवसाय के रूप में भी प्रतिष्ठित हो चुकी है। संगीत शिक्षण से शिक्षार्थी के मानसिक स्तर को एक उचित दिशा प्राप्त होती है। संगीत शिक्षण से विद्यार्थी में कला कौशल, प्रतिभा, अनुशासन, साधना शक्ति तथा प्रदर्षन क्षमता का विकास होता है।

संगीत के विकास क्रम पर दृष्टि डालने पर दिखाई पड़ता है कि वैदिक काल की दिव्यता व निर्मलता, रामायण काल व महाभारत काल की पवित्रता, मुगलकाल की कामुकता, भक्ति काल की धर्मपरायणता, मराठों एवं राजपूतों की वीरता व पराक्रमता, अंग्रेजों की हमारे संगीत के प्रति उदासीनता तथा आधुनिक युग में निष्पक्षता के मापदंड पर शिक्षा की मनोवृत्ति आदि का प्रभाव संगीत शिक्षा पर दिखाई पड़ता है। सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण एवं हस्तांतरण, व्यवसायिक कुशलता का विकास, सौदर्यानुभूति का विकास, कल्पना ्शक्ति का विकास, धार्मिक चेतना का विकास, श्रवणात्मक कुशलता का विकास, संगीत के सैद्धान्तिक पक्ष का ज्ञान तथा क्रियात्मक क्षमता का विकास आदि संगीत शिक्षण के उद्देश्य हैं।

संगीताकाश की दो महान विभूतियों पं० विष्णु नारायण भातखण्डे एवं पं० विष्णु दिगम्बर पलुस्कर ने संगीत शिक्षण, प्रशिक्षण के आध्यात्मिक धरातल को सुलभ तथा सुदृढ़ बनाने हेतु महत्वपूर्ण योगदान दिये। इन्हीं के प्रयासों के कारण ही संगीत विद्यालय स्थापित किए गए। विद्यार्थियों की सरलता के लिए कई सांगीतिक पाठ्यपुस्तकों की रचना कर संगीत सामग्री को उपलब्ध कराया तथा स्वरलिपि पद्धति का निर्माण करके बन्दिशों को संग्रहित कर संरक्षण प्रदान करने का कार्य किया। इन्हीं के प्रयासों के फलस्वरूप ही विधिपूर्वक संगीत शिक्षण हेतु पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें, परीक्षण तथा परीक्षण के उपरान्त सम्मानपूर्वक उपाधि वितरण की प्रक्रिया द्वारा संगीत शिक्षा को एक विषेश स्वरूप प्रदान किया गया।

आधुनिकता के इस दौर में शिक्षा का क्षेत्र एवं उद्देश्य बहुत व्यापक हो गये हैं। नैतिक और धार्मिक मूल्यों, व्यवहार की अवधारणा और सामाजिक दृष्टिकोण के साथ–साथ शिक्षा जीविका के लिए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षण दो पक्षों के मध्य चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षण की इस प्रक्रिया में मुख्यतः तीन पक्ष समायोजित होते हैं। पहला शिक्षार्थी (सीखने वाला), दूसरा शिक्षक (सिखाने वाला), तीसरा पाठ्यवस्तु, कौशल अथवा ज्ञान। शिक्षण एक कौशल युक्त क्रिया है। इस त्रिकोणीय प्रक्रिया के माध्यम से शिक्षक, शिक्षार्थी को उस विषय, कौशल अथवा ज्ञान का बोध कराता है।

त्रिकोणीय प्रक्रिया

भारत सरकार की नई शिक्षा नीति ;छम्च्2020द्ध के अन्तर्गत सजग व्यवस्था है। जिसके अन्तर्गत अनुसंधान एवं नवाचार, समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा, पाठ्यचर्या में लचीलापन, शिक्षा में प्रौद्योगिकी, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का डिजीटलीकरण, कौशल विकास के साथ–साथ व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करना आदि विषेशताएं सम्मिलित हैं। सरकार चाहती है कि छात्र की अभिव्यक्ति सशक्त हो, साथ ही उनमें शिक्षा का स्तर एवं अधिगम की क्षमता दृढ़ हो। सरकार की नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत संगीत को शिक्षण में सम्मिलित किया गया है जिससे छात्रों में सांस्कृतिक, नैतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा चारित्रिक गुणों का विकास हो सके। 2021 में छात्रों को संख्यात्मकता प्रदान करने हेतु तथा सार्वभौमिक साक्षरता के लक्ष्य के साथ निपुण भारत पहल की शुरुआत की गयी थी।

अध्ययन के उद्देश्य

संगीत शिक्षा एवं उसकी विभिन्न शिक्षण विधियों को इस शोध पत्र के माध्यम से रखने का यथेष्ट प्रयास कर रही हूं। मेरे अध्ययन का मुख्य उद्देश्य संगीत शिक्षण की विभिन्न शिक्षण विधियों एवं प्रविधियों का अध्ययन करना है। साथ ही संगीत शिक्षण को प्रभावशाली, रूचिकर एवं सफल बनाने हेतु शिक्षण विधियों से सम्बन्धित कुछ सुझाव व्यक्त करना है।

शोध विधि

यह शोध पत्र द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से लिखा गया है। यह अध्ययन मुख्य रूप से विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्र–पत्रिकाओं से एकत्र किए गए आंकड़ों पर आधारित है।

संगीत की शिक्षण विधियाँ

शिक्षा में नवीन तकनीक ने शिक्षण प्रणाली को बहुत प्रभावित किया है। वर्तमान समय में कक्षाओं में जिन नवीन तकनीकियों का प्रयोग किया जा रहा है, वह शिक्षण प्रक्रिया के लिए अत्यधिक लाभप्रद है। शिक्षण विधियों से सम्बन्धित नूतन प्रणालियों जैसे– क्रिया आधारित शिक्षण प्रणाली, रुचिपूर्ण शिक्षण प्रणाली, छात्र केन्द्रित शिक्षण प्रणाली, सहभागी शिक्षण प्रणाली, दक्षता आधारित शिक्षण प्रणाली, बहुस्तरीय शिक्षण प्रणाली इत्यादि का प्रयोग भी संगीत शिक्षको द्वारा किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त संगीत शिक्षण को प्रभावशाली बनाने हेतु संगीत शिक्षको द्वारा ऑनलाइन शिक्षण विधियो का, आई० सी० टी० आधारित शिक्षण विधियों का, शैक्षिक तकनीकी विधियों का प्रयोग भी संगीत शिक्षण के अन्तर्गत किया जाना चाहिए।

शिक्षण पैडागोजिकल एनालिसिस (Pedagogical Analysis) पर आधारित होना चाहिए। पैडागोजी का अर्थ है शिक्षण की कला या विज्ञान। पेडागोजिकल एनालिसिस आधुनिक शिक्षण के अन्तर्गत सम्मिलित है। इसका प्रयोग जितना अधिक किया जाएगा, विद्यार्थियों के स्तर में उतना ही अधिक सुधार होगा क्योंकि इससे सीखने की अभिलाषा बढ़ती है तथा विषय आनन्ददायक हो जाता है।

ब्लूम के शैक्षिक उद्देश्यों के वर्गीकरण के अनुसार पाठ का विषय–विश्लेषण करते समय पाठ–योजना, विषय वस्तु की संक्षिप्त अवधारणा, पूर्व ज्ञान का वास्तविक आधार, शैक्षिक उद्देश्य का निर्धारण, शिक्षक कौशल एवं पद्धति का चयन, विषयवस्तु की धारणा और उदाहरण, मूल्यांकन आदि स्तरों का ध्यान रखना चाहिए।

संगीत शिक्षक का कर्तव्य है कि संगीत कक्षा में विद्यार्थियों के समक्ष ज्ञान–मूलक, प्रयोग–मूलक, बोध–मूलक, दक्षता–मूलक और अभिव्यक्ति मूलक वातावरण क्रियान्वित करें। संगीत शिक्षक को संगीत की कक्षा में सुरयंत्र जैसे– तानपुरा, हारमोनियम आदि और तालयंत्र जैसे– तबला, पखावज आदि सहायक उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए। जिससे इस श्रव्य–दृश्य माध्यम से ज्ञान का मूर्तिकरण होगा साथ ही शिक्षण और भी अधिक प्रभावशाली होगा।

विद्यार्थियों के संगीत ज्ञान के मूल्यांकन हेतु लिखित परीक्षण, मौखिक परीक्षण, प्रश्नावली द्वारा परीक्षण, प्रायोगिक परीक्षण आदि से उनकी योग्यता एवं प्रदर्षन क्षमता का मूल्यांकन किया जा सकता है। जिसके अन्तर्गत स्वर पर आधारित ज्ञान जैसे – शुद्ध स्वर, कोमल और तीव्र स्वर से सम्बन्धित पहचान, दस थाट व उनसे उत्पन्न प्रारम्भिक रागों के विषय में प्रश्न किये जा सकते हैं। स्वर एवं लय–ताल सम्बन्धित प्रश्न भी किये जाने चाहिए साथ ही प्रदर्षन करने की प्रतिभा व क्षमता की जांच की जानी चाहिए।

संगीत शिक्षण को कुशल और प्रभावशाली बनाने के लिए खण्ड विधि, सेमिनार विधि, वाद–विवाद विधि, सम्पूर्ण विधि, प्रश्नोत्तरी विधि, समूह शिक्षण विधि, कार्यशाला विधि, ब्रेनस्टोरमिंग विधि, प्रकरण अध्ययन विधि, समूह चर्चा विधि, प्रोजेक्ट विधि, आगमन–निगमन विधि, व्याख्यान विधि, समस्या–समाधान विधि, वीडियो प्रस्तुति विधि, खोज विधि, कम्प्यूटर आधारित आदि विभिन्न विधियों का प्रयोग भी अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए।

मेरा मानना है कि इस नवीनीकरण युग में उपर्युक्त शिक्षण विधियों को अपनाकर संगीत शिक्षण को और भी अधिक प्रभावी और रूचिकर बनाया जा सकता है। यह पद्धतियाँ विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक मनोवृत्ति के साथ–साथ आत्म जागरुकता में सुधार करने में भी सहायक हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि उपर्युक्त अध्ययन में बताए गए प्रभावशाली शिक्षण विधियों के प्रयोग द्वारा संगीत शिक्षण को और भी अधिक रूचिकर बनाया जा सकता है। साथ ही संगीत शिक्षक द्वारा शैक्षिक तकनीकी का प्रयोग अधिक किया जाना चाहिए तथा छात्र केंद्रित शिक्षण विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए। जिससे शिक्षण के अधिगम से प्राप्त प्रतिफल में भी सकारात्मक वृद्धि होगी।

सन्दर्भ

1. माथुर, एस०एस०. शिक्षण कला एवं नवीन पद्धतियाँ।
2. कुलश्रेष्ठ, एस०पी०. शैक्षिक तकनीकी एवं उसके मूलाधार।
3. शाह, शोभना. संगीत शिक्षण प्रणाली।
4. ऋषितोश. संगीत शिक्षण के विविध आयाम।
5. कुमार, राजेश. संगीत की परम्परागत शिक्षण विधि।
6. (2009). संगीत मासिक पत्रिका. दिसम्बर. पृष्ठ 4.
7. (2012). संगीत मासिक पत्रिका. फरवरी. पृष्ठ 17–19.
8. इण्टरनेट से मिली जानकारी के अनुसार।